International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 09-11-2019; Accepted: 11-12-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 1; Jan 2020; Page No. 45-47

शहडोल जिले में बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

प्रगति त्रिपाठी
शोधार्थी शिक्षा, श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मेडिकल साइंसेस सिहोर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र शहडोल जिले में बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। आर्थिक परिस्थिति के आधार पर शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 40 बालिकाएँ कुल 1000 बालिकाओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शहरी क्षेत्र के बालिकाओं में से 6.60 प्रतिशत बालिकाओं ने अधिगम प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 52.00 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति कर ली है तथा 35.60 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर अग्रसर है एवं 5.80 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है। ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं में से 11.00 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 56.40 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 27.80 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 4.80 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

मूल शब्द: शहडोल जिला, माध्यमिक स्तर, बालिकाएँ, आर्थिक परिस्थिति, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना
बीसवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में राष्ट्रीय आन्दोलन के अन्तर्गत रा ट्रीय शिक्षा का आन्दोलन भी प्रारम्भ किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा की व्यवस्था के लिए राष्ट्रीय विद्यालयों का निर्माण प्रारम्भ किया गया इन्हीं विद्यालयों में वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना हुई। वनस्थली विद्यापीठ बालिका शिक्षा के क्षेत्र में एक अद्वितीय तथा सफल परीक्षण रहा। वनस्थली विद्यापीठ में बालिकाओं के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, व्यावहारिक, सामाजिक, क्षमताओं का उन्नयन करके उनके व्यक्तित्व का विकास करना था। इस समय भारतीय समाज के उच्च कुलीन व सम्पन्न वर्ग के लोगों को ही शिक्षा प्राप्त कर पाना संभव था।

भारतीय तथा पाश्चात्य शिक्षा शास्त्रियों के विचारों को एक साथ रखकर हम विश्लेषण करें तो उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में नये–नये अनुभव प्राप्त करता है और उन अनुभवों के आधार पर अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है तथा अपने आचरण को परिशुद्ध करता है। आधुनिक शिक्षाशास्त्री इसी परिवर्तन को शिक्षा कहते हैं। हम व्यक्ति के ऊपर बाहर से कुछ लाद नहीं सकते बल्कि उसकी जन्मजात शक्तियों को उत्प्रेरित कर सकते हैं। मनुष्य विभिन्न स्तरों पर शिक्षा ग्रहण करता है अर्थात् नये–नये अनुभव प्राप्त करता है, इन अनुभवों से उसकी मानसिक शक्ति का विकास होता है तथा उसकी तर्क, निर्णय, कल्पना तथा विचार शक्ति का पोषण होता है। जीवन में आये विभिन्न प्रसंगों पर वह विचार करता है जिससे उसका ज्ञानात्मक विकास तो होता ही है साथ ही उसका भावनात्मक विकास भी होता है। मनुष्य जीवन में अनेक अनुभूतियॉ करता है, जो व्यक्ति जितना अधिक भावुक होगा उसकी अनुभूति उतनी ही गहरी होगी। अनुभूतियों का हमारे मन पर प्रभाव पड़ता है और उससे हमारी रूचियों का विकास होता है तथा राग, द्वेष, करूणा, ममता, माया आदि भावनाओं का उदय होता है। इससे हम संवेदनशील बनते हैं। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का क्रियात्मक विकास भी होता है जिससे वह अनेक कुशलताओं तथा प्रवीणताओं पर प्रभुत्व प्राप्त करता है।

समाज का विकास उसमें निहित सम्पूर्ण मानवीय क्षमता का कुशलतापूर्वक उपभोग पर निर्भर करता है। समाज में सभी वर्ग के सहयोग के बिना पूर्ण विकास संभव नहीं हो सकता है। खासकर जब बालिकाओं को शिक्षा देने की बात हो तो कहाँ जायेगा कि बालिकाआरें को शिक्षा देने के एक और फायदा हैं कि एक परिवार के साथ एक समाज भी शिक्षित होता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
माध्यमिक स्तरीय बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति के आधार पर शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव की सफलता के लिए किये जा रहे सभी प्रयासों तथा उक्त सम्बर्ग के बालिकाओं में शैक्षिक अधिगम के सुधार के लिए वास्तविक स्थिति का अध्ययन तथा उसमें वांछित सुधार हेतु सुझाव देने के लिए शैक्षिक शोध करने की आवश्यकता है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य
शिक्षा आयोग स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान में सभी नागरिकों को समान अधिकार प्रदान किये गये। महिलाओं जो सदियों से सामाजिक अन्याय एवं शोषण का दंश झेल रही थी उनकी स्थिति को भी सुधारने के लिए भी प्रयास प्रारंभ किये गये। भारत सरकार ने सन् 1952 में माध्यमिक शिक्षा आयोग (मुदालियर आयोग 1952–53) का गठन किया गया। आयोग का मत था कि माध्यमिक स्तर पर बालकों के मसा नही बालिकाओं को शिक्षा प्रदान की जाये। बालिकाओं के लिए गृहविज्ञान के अध्ययन की व्यवस्था की जाए। आवश्यकतानुसार विद्यालय खोले जाएं। जहां बालिका विद्यालय खोलना संभव न हो वहाँ सहशिक्षा की स्वीकृति दी जाए।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नवत प्रमुख उद्देश्य हैः

- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- वर्तमान समय में बालिका शिक्षा संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ
शोध कार्य में परिकल्पना प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है, जिससे समस्या समाधान को उचित दिशा मिलती है। विज्ञान में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

शोध कार्य का क्षेत्र जिला शहडोल है। इसके अन्तर्गत 5 विकासखण्ड – सोहागपुर, गोहपारू, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंहनगर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक स्तरीय बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति के आधार पर शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव, इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

समष्टि व प्रतिदर्श

चूंकि शहडोल जिला का क्षेत्र व्यापक है, सभी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 5–5 माध्यमिक विद्यालय कुल 25 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के माध्यमिक विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संवंधित हो।

आर्थिक परिस्थिति के आधार पर शैक्षिक अधिगम पर प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 40 बालिकाएँ कुल 1000 बालिकाओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृ टयों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत ;ग्द्धए ैण्क्ए जश् ज्मेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव की सार्थकता हेतु परीक्षण पत्रक/ कक्षा 10 वीं गणित का परीक्षण किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से नागर, के. एन., (1996) [1], गुप्ता, सुधीर कुमार, (2001)[2], गुप्ता एस.पी. (2001)[3], मेहता, सी. (1970)[4], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[5] त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016)[6] प्रधान, जी. एस. (1992)[7] ने शोध विधि एवं बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शहडोल जिले का सामान्य परिचय

शहडोल जिला भारत वर्ष के हृदय स्थल मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में $22^0 38'$ उत्तरी अक्षांश से $24^0 20'$ उत्तरी अक्षांश एवं $30^0 28'$ पूर्वी देशांतर से $82^0 12'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। शहडोल जिले का नाम सोहागपुर गॉव के शहडोलवा अहिर के नाम पर आधारित है। शहडोल जिले का कुल क्षेत्रफल 5671 वर्ग कि.मी. है। इस जिले की उत्तर से दक्षिण की अधिकमतम लम्बाई 170 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम की अधिकतम लम्बाई 110 कि.मी. है। प्रशासकीय दृष्टि से शहडोल जिले में चार तहसीलें–सोहागपुर, जैतपुर, ब्यौहारी, एवं जयसिंह नगर हैं। तथा पॉच विकासखण्ड–सोहागपुर, पाली, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंह नगर हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव			
		शहरी विद्यालयों के बालिकाएँ		ग्रामीण विद्यालयों के बालिकाएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 से ऊपर किन्तु 40 अंक से कम (शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति नहीं)	33	6ण60	55	11ण00
2.	40 अंक से अधिक किन्तु 60 अंक से कम (शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति)	260	52ण00	282	56ण40
3.	60 अंक से अधिक किन्तु 80 अंक से कम (शैक्षिक अधिगम की ओर अग्रसर)	178	35ण60	139	27ण80
4.	80 अंक से अधिक किन्तु 100 अंक से कम (शक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर)	29	5ण80	24	4ण80

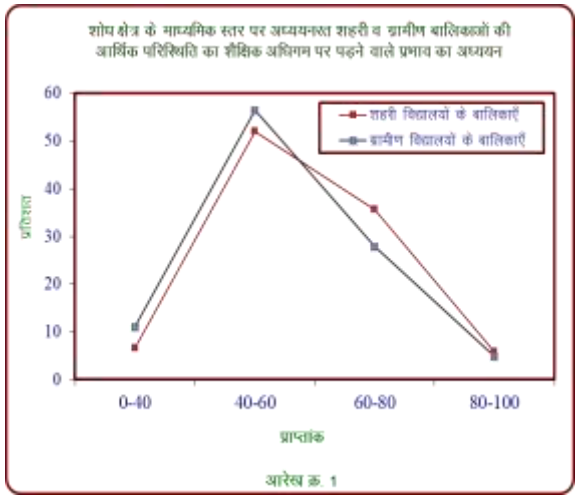

आरेख क्र. 1

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 1 से न्यादर्श हेतु चयनित माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत 500 शहरी एवं 500 ग्रामीण बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बंधी जानकारी का संकलन किया गया है। उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े दर्शाते है, कि शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 शहरी बालिकाओं में से 33 शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति नही की, जबकि 260 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति कर ली है तथा 178 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर अग्रसर है एवं 29 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

इसी प्रकार शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं में से 55 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति नही की, जबकि 282 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 139 शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 24 बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 शहरी क्षेत्र के बालिकाओं में से 6.60 प्रतिशत बालिकाओं ने अधिगम प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 52.00 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति कर ली है तथा 35.60 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर अग्रसर है एवं 5.80 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं में से 11.00 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 56.40 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 27.80 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 4.80 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

सारणी क्र. 2: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण

<table>
<tr><th colspan="2">समूह</th><th>शहरी क्षेत्र की बालिकाएँ</th><th>ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाएँ</th></tr>
<tr><td colspan="2">समूह की संख्या (छ)</td><td>500</td><td>500</td></tr>
<tr><td colspan="2">मध्यमान (ड)</td><td>58.56</td><td>56.22</td></tr>
<tr><td colspan="2">मानक विचलन ै(व)</td><td>13.09</td><td>13.14</td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रान्तिक निष्पत्ति (ब्त्ध्</td><td colspan="2">2.82</td></tr>
<tr><td rowspan="2">निष्कर्ष</td><td>0.05 सार्थकता स्तर पर</td><td colspan="2">सार्थक अन्तर है</td></tr>
<tr><td>0.01 सार्थकता स्तर पर</td><td colspan="2">सार्थक अन्तर है</td></tr>
</table>

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 58.56 तथा मानक विचलन 13.09 है तथा ग्रामीण छात्राओं का औसत उपलब्धि 56.22 तथा मानक विचलन 13.14 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्त्ए ज्मेज) किया गया, जिसमें ब्त् का मान 2. 82 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.97 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.59 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर पाया गया। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना "शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी व ग्रामीण बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।" अस्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्ननुसार हैं–

- शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 शहरी क्षेत्र के बालिकाओं में से 6.60 प्रतिशत बालिकाओं ने अधिगम प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 52.00 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की प्राप्ति कर ली है तथा 35.60 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर अग्रसर है एवं 5.80 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।
- शोध क्षेत्र में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 500 ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं में से 11. 00 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 56. 40 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 27.80 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 4.80 प्रतिशत बालिकाओं ने शैक्षिक अधिगम के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।
- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी बालिकाओं की आर्थिक परिस्थिति का शैक्षिक अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 58.56 तथा मानक विचलन 13.09 है तथा ग्रामीण छात्राओं का औसत उपलब्धि 56.22 तथा मानक विचलन 13.14 है।

सन्दर्भ सूची

1. नागर, के. एन. ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', मोनाक्षी प्रकाश मेरठ, 1996.
2. गुप्ता, सुधीर कुमार, ''मध्यप्रदेश के माध्यमिक स्तर के छात्राध्यापकों का समायोजन मूल्य और अभिवृत्ति में सृजनशीलता और असृजनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन'' बरकतुल्ला विश्वविद्यालय भोपाल, मध्यप्रदेश, 2001.
3. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
4. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
5. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
6. त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016) "रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research, Volume 1; Issue 9; November 2016; Page No. 05-07.
7. प्रधान, जी. एस. ''सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के नैतिक निर्णय के विकास में उनकी सामान्य बुद्धि, व्यक्तिगत मूल्य अभिवृत्ति एवं लिंग का तुलनात्मक अध्ययन'', नागपुर, 1992.